

बातचीत के बीच टोकना – ‘उचित’ या ‘अनुचित’

डॉ० पूनम यादव,

असिस्टेंट प्रोफेसर, अदिति महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

सार

रुकावटें अनेक प्रकार की होती हैं। यह लेख विशेष कर बातचीत के दौरान कभी न कभी सभी रुकावटों या यों कहिए कि बातचीत के दौरान बीच में टोकने का सामना करने का अनुभव स्पष्ट करता है, जो कभी-कभी खलता है और कभी हम इस पर ध्यान नहीं देते या कभी इसे अनदेखा कर देते हैं, क्या ये वाकई असभ्य तरीका है? या आमतौर पर इस पर लोग प्रतिक्रिया नहीं देते/करते या यह आम है कि इस पर क्या ध्यान देना, यह मानकर छोड़ देते हैं। क्या वाकई बीच में टोकना अशिष्ट व्यवहार है?

प्रमुख शब्द: रुकावटें, संप्रेषण, बातचीत के नियम, टोकना, उचित-अनुचित, विनम्रता, अनुशासनहीनता, औपचारिकता, संवादियता,

परिचय

“रुकावट के लिए खेद है” इस वाक्य से हम सभी परिचित हैं— यह वाक्य अक्सर हमें दूरदर्शन पर दिखाई दे जाता था, जिसका उपयोग दूरदर्शन पर तब होता था जब संचरण के दौरान किसी तकनीकी त्रुटि के कारण (तकनीकी कारणों से) बाधा आ जाती थी। उस समय सभी (दर्शक) बेसब्री से दुबारा कार्यक्रम शुरू हो, इसका इंतजार करते थे। इस लेख में इस बात का जिक्र करने का तात्पर्य कुछ और है। बाधा या रुकावट बहुत प्रकार की हो सकती है। यहाँ हम बातचीत में रुकावट या बाधा पर बात करने वाले हैं। संप्रेषण या संचार या बातचीत के कुछ नियम होते हैं जिसमें सामान्य-सा नियम है कि अपनी बारी का इंतजार करना। जब एक व्यक्ति बोलता है तो दूसरा व्यक्ति सुनता है और बोलने के लिए अपनी बारी का इंतजार करता है। जब पहला व्यक्ति बोल चुकता है तभी दूसरा व्यक्ति बोलता है और इस प्रकार वार्तालाप चलता रहता है। डॉ०

भोलानाथ तिवारी ने अपनी पुस्तक ‘भाषा विज्ञान’ में इसे ‘भूमिकाओं की परस्पर परिवर्तनीयता कहा है।’ वे कहते हैं, “जब हम बातचीत करते हैं तो वक्ता-श्रोता की भूमिकाएँ बदलती रहती हैं। वक्ता बोलता है तो श्रोता सुनता है या फिर जब श्रोता उत्तर देता है या अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है तो वह वक्ता बन जाता है और तब प्रथम वक्ता श्रोता हो जाता है। यही है भूमिकाओं की अदला-बदली या उनका क्रम परिवर्तन या उनकी परस्पर परिवर्तनीयता।”

वहीं सी०एफ० हॉकेट इसे ‘टर्न टेकिंग’ कहते हैं। वे कहते हैं कि हम बोलने के लिए विनम्रतापूर्वक अपनी बारी की प्रतीक्षा करते हैं। अधिकांश वार्तालापों में जब कोई बोल रहा हो तो हम बीच में नहीं बोलते/टोकते न ही हम स्पर्धा करते हैं(बराबरी)।”

सी०एफ० हॉकेट और एस० ऑल्टमैन ने इसे ‘इंटरचेंजेबिलिटी’ कहा है।

अगर हम सभी एक साथ बोलेंगे/बातचीत करेंगे तो किसी को भी किसी की बात समझ में नहीं आएगी जिससे शोर होगा, नतीजा 'निल बटे सन्नाटा'। एक सभ्य समाज में यह अपेक्षा की जाती है कि सभी बातचीत के दौरान बुनियादी नियमों का पालन करें ताकि बातचीत को जारी रखा जा सके।

परंतु अक्सर हर किसी ने यह अनुभव किया है कि बातचीत के दौरान कई बार दूसरा व्यक्ति (या श्रोता) आपकी बात को बीच में ही काटकर अपनी बात कहना शुरू कर देता है। ऐसा क्यों होता है? हम ऐसा क्यों करते हैं? क्या हम में इतना भी धैर्य नहीं कि दूसरे व्यक्ति को उसकी बात पूरी करने दें और फिर हम बोलें।

ऐसा ज्ञात होता है कि लोग अक्सर ऐसा इसलिए करते हैं कि वे अपनी उत्सुकता को विराम नहीं दे पाते। जिस विषय पर चर्चा हो रही है, उस विषय पर अपनी प्रतिक्रिया या ज्ञान दिखाने/जताने की अधीरता, जिज्ञासा उन्हें ऐसा करने के लिए बाध्य करती है।

सन् 2020 में कई दर्शकों ने कमला हैरिस की उपराष्ट्रपति की बहस के दौरान सराहना की, जहाँ माइक पेंस को कमला द्वारा बार-बार यह कहा गया कि "उपराष्ट्रपति जी" मैं बोल रही हूँ, उनका विरोध और उनका मौखिक निर्देश इस विषय पर बढ़ती जागरूकता को विशेष रूप से प्रतिध्वनित करता है जिसमें देखा गया कि पुरुष महिलाओं को बातचीत के दौरान अनेकों बार बाधित करते हैं जबकि महिलाओं में यह बहुत कम देखा जाता है।

बातचीत करना केवल संचार के लिए नहीं बल्कि यह रिश्तों को कायम रखने के बारे में भी है स कोई भी उन व्यक्तियों को नापसंद कर सकता है जो बातचीत के दौरान टोकते हैं या बाधित करने का प्रयत्न करते हैं। ऐसा लगता है कि यह स्वतः सिद्ध है कि वक्ता के कथन समाप्त होने से पहले ही श्रोता बोलना शुरू कर दे।

औपचारिक संदर्भों जैसे राजनीति के बहसों में इसे नियमों का उल्लंघन माना जाता है। प्रायः यह माना जाता है कि किसी बातचीत के बीच में बोल पड़ना यह दर्शाता है कि व्यक्ति उस विषय के प्रति अति उत्साहित है जो वक्ता बोल रहा है। कई बार उसे चुप करवाने की बजाय, यह उस व्यक्ति को बोलने के लिए प्रोत्साहित भी करता है। इसको देवराह तानेन ने "सहकारी अतिव्यापी"(Co-operative overlapping) कहा है। बातचीत के दौरान यह विशेषता बरसों से देखी गई है और देखी जाती रहेगी।

हाल ही में जब कोरोना के बाद जैसे-जैसे दफ्तर और स्कूल खुले और हम एक-दूसरे से प्रत्यक्ष में मिलने लगे, सामाजिक कार्यों में हिस्सा लेने लगे तो ऐसा लगने लगा कि हमें संप्रेषण के नियम या तरीके फिर से सीखने की आवश्यकता है। किस तरह बातचीत शुरू करना है। कैसे फिर से बातचीत के बीच में जुड़ना है और किस तरह उस बातचीत में बने रहना है आदि। जबकि जब हम ऑनलाइन किसी भी सेमिनार या लेक्चर में यदि हम बीच में बोलना चाहें तो यह बहुत आसान होता है क्योंकि स्क्रीन में हाथ उठाने का निशान होता है जिसे हम दबा कर, वहाँ उपस्थित लोगों को यह बता सकते हैं कि मैं कुछ बोलना चाहती हूँ, उचित समय आने पर आपको बोलने का मौका दिया जाता है।

जब हम किसी वार्तालाप के बीच होते हैं तब हम आप कैसे बताते हैं कि मुझे/आपको कुछ बोलना है? बीच में बोलना या टोकना क्या एक अशिष्ट या असभ्य व्यवहार है स जब आपको कोई बीच में टोकता है तो आप क्या करते हैं। किसी भी भाषण या राजनैतिक वाद-विवाद में बीच में टोकना नियमों का उल्लंघन करना है जबकि अनौपचारिक वार्तालाप में इसे अशिष्ट या असभ्य समझा जाता है। सहकारी अतिव्यापी अवधारणा को देवराह तानेन के अकादमिक लेखन से जोड़ा गया था और सार्वजनिक प्रवचन

पर जोर दिया गया था। उन्होंने लिखा कि जब एक पत्रकार एरिन वीवा ने एक टिकटॉक विडियो ट्वीट किया जिसमें एक उपयोगकर्ता सारी ने मेरी किताब 'कन्वर्सेशनल स्टाइल' में इस 'संवादीय शैली' की खोज को लेकर अपने उत्साह को साझा किया। बहुतों ने इस पर समर्थन व्यक्त किया कि जिस व्यवधान के लिए उनकी आलोचना की गई वह वास्तव में मान्यता प्राप्त सहायक संवादात्मक कदम है।

सभी संवादीय आदतों की तरह सहकारी अतिव्यापी का भी सांस्कृतिक रूप है। यह वैसे ही सीखी जाती है जैसे भाषा सीखी जाती है, दूसरे की बातें सुनते हुए, दूसरों का बातचीत का तरीका देखते-सुनते हुए।

देवेराह तानेन कहती हैं कि उन्होंने इस व्यवहार/तरीके को सबसे पहले खाने की मेज पर पहचाना। जिस बातचीत में वह और उनके 5 साथी उपस्थित थे। उन्होंने बातचीत का विश्लेषण किया जिसमें उन्होंने पाया कि कब दो आवाजें एक साथ बोली गईं। उन्होंने पाया कि न्यूयॉर्क निवासी अक्सर बीच में बोलते हैं। और यदि हम दूसरे न्यूयॉर्क निवासी के बीच में व्यवधान डालते हैं तो वह वक्ता बोलता ही रहता है परंतु यदि हम ऐसा किसी गैर न्यूयॉर्कवासी के साथ करते हैं तो बोलने वाला चुप हो जाता है।

यदि कोई ऐसे वार्तालाप को सुने तो उसे यह असह्य व्यवधान लगेगा। किसी ने अचानक बोलना शुरू कर दिया जबकि पहले व्यक्ति ने अभी तक अपनी बात पूरी नहीं की है/अपना वाक्य पूरा नहीं किया है और उसे बीच में ही टोक दिया गया।

सहकारी अतिव्यापी participatory listenership का एक सक्रिय संरचना है। सभी सुनने वालों को ऐसा कुछ करना चाहिए या दिखाना चाहिए जिससे यह लगे कि वे मानसिक रूप से इस वार्तालाप में बने हुए हैं न कि इससे अलग हो गए हैं। अगर वे ऐसा नहीं करते तो

बोलने वाले व्यक्ति को बातचीत को जारी रखना संभव नहीं हो पाता है।

'सिर हिलाकर' या 'हम्म' या 'ऊँह' कहना आपकी बात को सुनने के संकेत हैं या धीरे से बुदबुदाना कि 'मैं भी यही करती', या कहने वाले की बात को दोहराना, या इसी तरह की कहानी के साथ संक्षेप में हस्तक्षेप करना। श्रोता के मन में यदि कोई जिज्ञासा है तो हाथ उठाकर वह वक्ता को यह संकेत कर सकता है कि उसके मन में कोई प्रश्न है। सही रुकावटें यदि परस्पर सहमति से हों तो बातचीत को आगे बढ़ा सकते हैं और वक्ताओं को बातचीत को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। यह दिमाग को तेज बनाता है और वाक्पटु भी मानक वैज्ञानिक और भाषा वैज्ञानिकों/भाषाविदों ने over lapping बातचीत को दुनियाभर की विभिन्न संस्कृतियों में उत्साही भागीदारी के रूप में वर्णित किया है जो उन्होंने अपने समुदायों से हासिल किया है।

किसी भी क्षेत्र या सांस्कृतिक समूह के सभी सदस्यों की शैली समान नहीं होती है और जो एक तरह के वातावरण में पले-बढ़े हैं और फिर दूसरे वातावरण में स्थानांतरित होने पर वे आतुर हो सकते हैं। जब संवादीय शैलियाँ टकराती हैं तब समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। जो व्यक्ति सहकारिता के अतिव्याप्ति के सिद्धांत अभ्यस्त नहीं होते, वे अपने आपको बाधित महसूस करते हैं और अक्सर खामोश हो जाते हैं।

इस प्रकार बातचीत के दौरान जिज्ञासा को प्रकट करने के लिए अनुशासन का पालन करना आवश्यक है। इसके लिए किसी संकेत अथवा भाव को मौखिक रूप से व्यक्त करते हुए सफल संवाद को स्थापित किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. C.F. Hockett- 1958, A course in Modern Linguistic, Mac Milan, New York

2. Altmann S.R., C.F. Hockett -1968, A Note on Design Features.
3. तानेन देवराह 2005-Conversational Style, Oxford University Press
4. तिवारी भोलानाथ 1989 भाषा विज्ञान, किताबमहल, इलाहाबाद, पृष्ठ-13
5. Yule, G. 2010, The Study of Language, Cambridge University Press
6. Aitchison, J., 2004, The articulate Mammal, Routledge, New York
7. Crystal, D., 1987, The Cambridge Encyclopedia of Language, Cambridge University Press